ज्ञानोदय प्रभा

अंक नवम्बर २०२२

संपादक की कलम से

"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
कहे कबीर हरि पाइए,मन ही की परतीत"

मन की शक्ति प्रचंड है | मन जो ठान लेता है, उसे करके ही छोड़ता है | हम अपने मन मस्तिष्क को जो भी संकेत देते हैं, वह वैसा ही व्यवहार करने लगता है, वैसे ही रास्ते तलाशने लगता है | हम जो भी करना चाहते हैं, उसे करने का संकल्प और सही रास्ते हमें अपनी मंजिल तक पहुँचा ही देते हैं | जरूरत है बस, स्वयं को पहचानने की | कई बार हम किसी महत्त्वपूर्ण वस्तु पाने का स्वप्न तो देखते हैं, पर उसे पाने के लिए आवश्यक प्रयास नहीं करते | हमें अपनी योग्यता पर विश्वास नहीं होता | यही कारण है कि अनादि काल से हमारे देश के महान पुरुष स्वयं को जानने की सीख देते चले आ रहे हैं | श्री राम चरित मानस के सुन्दरकाण्ड प्रसंग में वर्णित हनुमान जी का प्रसंग आपको याद है न ? जब हनुमान जी से कहा गया कि आपको समुद्र लाँघना है तो एक बार तो वे संकोच में पड़ गए | उन्हें लगा कि वे इस कार्य को कर पाने में असमर्थ हैं परन्तु जब उनको उनकी शक्ति के बारे में बताया गया तो वे आसानी से समुद्र लाँघ गए | वास्तव में मनुष्य असंख्य शक्तियों का भण्डार है | हम उसका प्रयोग ठीक से नहीं करते | संसार में जिन्होंने भी स्वयं पर विश्वास किया है, वे बड़े से बड़ा कार्य करने में समर्थ हुए हैं | कई लोग संकल्प रहित होकर केवल भाग्य को कोसते रहते हैं, जीवन में असफल व्यक्ति का ठप्पा लगा लेते हैं और निराशा में डूब जाते हैं | हमें निराश नहीं होना है | हमें अपने कर्म पर विश्वास करना है और अनवरत आगे बढ़ते जाना है | जीवन में जय और पराजय केवल मन के भाव हैं | जब हम किसी कार्य के आरम्भ में ही हार मान लेते हैं, तो सचमुच में ही हार जाते हैं | लेकिन जब मंजिल को प्राप्त करने के लिए संकल्प लेकर परिस्थितियों से जूझने लग जाते हैं तो सफलता हमारे कदम चूमने लगती है | वीर शिवाजी को जब किसी ज्योतिषी ने कहा कि तुम्हारे भाग्य में एक भी किला जीतना नहीं लिखा है, तो वे निराश नहीं हुए | उन्होंने ज्योतिषी से मासूमियत से पूछा – " गुरु जी मेरे हाथ में कौन सी रेखा बन जाती तो मैं किला जीत लेता ?"

ज्योतिषी ने हाथ देखते हुए कुछ समझाया | कहते हैं कि शिवाजी ने इसके बाद संकल्प लिया और किला जीतने की ठानी | इतिहास गवाह है कि उन्होंने एक नहीं पूरे सौ किले जीते और वे छत्रपति शिवाजी कहलाए | आज हम उन्हें आदर की दृष्टि से देखते हैं | बल्ब के आविष्कारक थॉमस अल्वा एडिसन अपनी प्रारंभिक खोज में अनेक बार असफल हुए किन्तु उन्होंने कभी अपने ऊपर अविश्वास नहीं किया और न ही निराशा में स्वयं को डुबोया | वे लगातार प्रयोग करते रहे और अंततः सफल हुए | मनुष्य एक बार जो ठान ले, उसे निश्चित रूप से प्राप्त कर सकता है |इसमें लेश मात्र भी संदेह नहीं है | इस सम्बन्ध में अनेक महापुरुषों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं | विवेकानन्द लिखते हैं – " उठो और संकल्प लेकर कार्य में जुट जाओ, यह जीवन भला कितने दिन का ? जब तुम इस संसार में आए हो तो कुछ चिह्न छोड़ जाओ अन्यथा तुममें और वृक्षादि में अंतर क्या रह जाएगा ? वे भी पैदा होते हैं, परिणाम को प्राप्त होते हैं और मर जाते हैं | इसलिए उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए | " राष्ट्र कवि मैथलीशरण गुप्त लिखते हैं - नर हो न निराश करो मन को, कुछ काम करो, कुछ काम करो, जग में रह कर कुछ नाम करो यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो, समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो | सच में समय की कीमत हमें पहचाननी ही होगी, यदि हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है | समय प्रबंधन, निरंतरता, परिस्थितियों से न घबराना और स्वयं को पहचानकर सही रास्ते का चुनाव | ये वे मूल मन्त्र हैं, जिनको अपना कर कोई भी सहजता से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है | बस हमें सही प्रयास करने की आवश्यकता है| किसी ने सच ही कहा है –

"कौन कहता है कि नहीं हो सकता – आसमां में सुराख
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो |"

आइए हम भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साहसिक कदम उठाएँ | उसे प्राप्त करने में जुट जाएँ | बहुत बहुत शुभकामनाएँ |

नवम्बर माह की गतिविधियाँ

१.खजाने की खोज

हम केवल उन्हीं क्षणों में जीवित कहे जा सकते हैं, जब हमारा हृदय हमारी वस्तुओं के प्रति सचेत होता है | इसी विचार को ध्यान में रखते हुए '३ नवम्बर को पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के लिए खजाने की खोज' गतिविधि का आयोजन किया गया | यह गतिविधि कुछ वस्तुओं को खोजने एवं उन्हें प्राप्त करने के बारे में थी | इस बाहरी गतिविधि 'खजाने की खोज' ने बच्चों को सक्रिय होने एवं अन्वेषण करने के लिए प्रोत्साहित किया | बच्चों ने इस गतिविधि के माध्यम से यह समझा कि हम कहीं भी खजाने की तलाश कर सकते हैं | इस गतिविधि में बच्चों को न केवल वस्तुओं को खोजने में आनंद आता है अपितु वे बाहरी स्थानों के बारे में जानकर भी खुश होते हैं | इस गतिविधि का उद्देश्य बच्चों की खोज एवं जिज्ञासा के रुझान को बढ़ावा देना था |

२. गुरुनानक जयंती समारोह

मंगलवार, दिनांक ८ नवंबर २०२२ को ज्ञानोदय विद्यालय के नायकन हॉल में गुरुनानक जयंती बड़े धूम धाम से मनाई गई| इस सुअवसर पर कक्षा पाँच से ग्यारह तक के बच्चों द्वारा शबद गायन की प्रस्तुतियाँ दी गईं | शबद गायन के लिए लगभग २० बच्चों ने प्रशिक्षण लिया जिसमें से अंतिम रूप से चयनित प्रतीक्षा यादव कक्षा ६ अ, कृतिका यादव कक्षा ६ ब, अपूर्वी कक्षा ६ अ, विधि यादव कक्षा ७ द ,भव्याश्री कक्षा ९ ब, आरुषी जैन ११ अ, माही जैन ११ ब सहित कुल सात बच्चों ने एकल शबद गायन प्रस्तुतियाँ दीं |

इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को भारतीय संस्कृति एवं गुरुनानक की शिक्षाओं से अवगत कराना था | इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए एवं इस पावन पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बच्चों के मनमोहक गायन को सराहा |

३. मस्तिष्क परीक्षण गतिविधि

९ नवम्बर बुधवार को पूर्व प्राथमिक अनुभाग ने बच्चों के लिए 'मस्तिष्क परीक्षण' गतिविधि का आयोजन किया | ये गतिविधियाँ बच्चों के दिमाग को काम करने और उनकी सोच को तेज करने के लिए सबसे अच्छी साक्षरता गतिविधियों में से एक है | बच्चों के लिए मस्तिष्क परीक्षण के लिए तैयार प्रश्न अजीब पहेली जैसे होते हैं, जिन्हे हल करने के लिए बच्चों को अपरंपरागत और रचनात्मक तरीकों से सोचने की आवश्यकता होती है | सोचने के कौशल के अलावा, मस्तिष्क परीक्षण बच्चों को नई - नई बातें सीखने, समझने और व्याख्या करने में मदद करने का एक मजेदार तरीका है| यह बच्चों के लिए एक स्वतंत्र रूप से सोचने की गतिविधि है| बच्चों को मनोरंजक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उनके संज्ञानात्मक कौशल जैसे - ध्यान, एकाग्रता और स्मृति में सुधार करने में मदद करना ही इस गतिविधि का उद्देश्य था| इस गतिविधि की प्रभारी श्रीमती शोभा भारद्वाज थीं |

४. अजनबी खतरा गतिविधि

१२ नवंबर को पूर्व प्राथमिक अनुभाग में 'अजनबी खतरा गतिविधि' का आयोजन किया गया, जिसका ध्येय वाक्य था – 'आश्वस्त रहें, सुरक्षित रहें, जागरूक रहें, सतर्क रहें |' इस गतिविधि में कुछ चेतावनी संकेतों के माध्यम से सुरक्षात्मक उपायों को समझाया गया | कुछ सरल नियम बताए गए ,जिन्हें अपनाकर सुरक्षित रहा जा सकता है, जब कि वे किसी विश्वासपात्र व्यक्ति के साथ नहीं हैं | खतरे के संकेत - जैसे कोई अजनबी जब किसी बच्चे के पास आता है और उनसे बात करता है या सवाल पूछना शुरू कर देता है | कोई अजनबी उनसे मदद माँग रहा है | कोई अजनबी आपकी पसंदीदा चॉकलेट और खिलौने दे रहा है आदि | बच्चों को सुरक्षित रहने के कुछ सरल उपायों पर चर्चा करते हुए उन्हें समझाया गया कि कभी भी किसी ऐसे व्यक्ति के साथ कहीं न जाएँ जिसे आप जानते नहीं या विश्वास नहीं करते | अजनबियों की कारों से दूर रहें | कभी भी किसी अजनबी से कुछ भी न लें, भले ही वह आपकी व्यक्तिगत चीज ही क्यों न हो | इस उद्देश्यपरक गतिविधि ने बच्चों को उनकी सुरक्षा के प्रति आगाह करने में सफलता हासिल की | इस गतिविधि में अजनबी की भूमिका नीलेश जी ने निभाई | इस गतिविधि की प्रभारी थीं - सुश्री हुमा नाज़ |

५. अंतरसदनीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता

दिनांक ९, १०, ११, और १२ नवंबर को ज्ञानोदय विद्यालय के वॉलीबॉल मैदान में अंतरसदनीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। चारों सदनों के विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लिया। यह प्रतियोगिता चार वर्गों जूनियर बालक, जूनियर बालिका एवं सीनियर बालक एवं सीनियर बालिका के लिए आयोजित की गई। जूनियर बालक वर्ग में टैगोर सदन ने सरोजिनी सदन को हराकर तथा लक्ष्मी सदन ने विवेकानंद सदन को हराकर फाइनल में प्रवेश किया।
वहीं दूसरी ओर सीनियर वर्ग बालक में सरोजिनी सदन ने टैगोर सदन को तथा लक्ष्मी सदन ने विवेकानंद सदन को पराजित कर फाइनल में प्रवेश किया।

जूनियर बालिका वर्ग के प्रथम मैच में सरोजिनी हाउस ने टैगोर हाउस तथा द्वितीय मैच में विवेकानंद ने लक्ष्मी हाउस को पराजित कर फाइनल में प्रवेश किया।
सीनियर वर्ग बालिका में सरोजिनी हाउस ने टैगोर हाउस तथा विवेकानंद हाउस ने लक्ष्मी हाउस को पराजित कर फाइनल में अपनी- अपनी जगह बनाई।
प्रतियोगिता के सफल संचालन में कक्षा १२ वीं एवं ११ वीं के शारीरिक शिक्षा के छात्रों ने विशेष भूमिका निभाते हुए प्रतियोगिता संचालन से संबंधित अनेक गुर सीखे।इस अंतर सदनीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता के प्रभारी शारीरिक शिक्षा शिक्षक श्री त्रिलोक सिंह थे|

६. सीएम कप (संकुल स्तर) के अंतर्गत विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिनांक २८ नवंबर २०२२ को ज्ञानोदय प्रांगण में सीएम कप (संकुल स्तर) के अंतर्गत विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। ज्ञानोदय के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा फुटबॉल बालक एवं बालिका, कबड्डी बालक एवं वॉलीबॉल बालिका वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा वॉलीबॉल बालक वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त किया | संकुल स्तर पर विजेता प्रतिभागियों ने दिनांक ४ दिसंबर २०२२ को जिला स्तर पर सागर में प्रतिभाग कर फुटबॉल बालिका वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया, तथा अन्य खेलों में सराहनीय प्रदर्शन करते हुए संभाग स्तर के लिए चयनित हुए।

७. किशोर परामर्श सत्र

ज्ञानोदय विद्यालय में लड़कियों के लिए एक किशोर परामर्श सत्र का आयोजन किया गया | इस सत्र में कक्षा ६-८ की १४४ लड़कियो ने सहभागिता की | किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था होती है जहाँ हर व्यक्ति कुछ खास परिवर्तनों से गुजरता है | इस अवस्था में मानसिक और शारीरिक संरचना में परिवर्तन होता है | इन परिवर्तनों को समझने के लिए, ज्ञानोदय विद्यालय में एक किशोर परामर्श सत्र का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य युवाओं को इस अवस्था के प्रति समझ बनाने में मदद करना था | भावनाओं, व्यवहार और विचारों की गहनता के कारण किशोर लड़कियां अत्यधिक संवेदनशील होती हैं और इसी कारण सबसे ज्यादा शिकार होती हैं | इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्हें जागरूक बनाने के लिए इस सत्र का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य अपनी भावनाओं को साझा करने के लिए एक सुरक्षित स्थान बनाना था, जहाँ वे अपनी भावनाओं को बिना किसी डर के व्यक्त कर सकें | इस सत्र के बाद निम्नलिखित प्रमुख बिंदु उभरकर सामने आए - किशोर लडकियाँ अपनी अप्रिय भावनाओं को बेहतर ढंग से बाहर निकालने में सक्षम होती हैं। यह आकलन किया गया कि किशोरियाँ डर के बिना अपने जीवन के नकारात्मक अनुभवों को साझा करने में सक्षम हैं |

किशोर लड़कियों के नकारात्मक साथियों के प्रभाव में आने और शिकार होने की संभावना कम होती है | किशोरियाँ अपने शैक्षणिक लक्ष्यों और जीवन के लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होती हैं। किशोरियाँ विश्वासपूर्वक शारीरिक एवं मानसिक चुनौतियों का सामना कर सकें इसके लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है | किशोर लड़कियाँ लचीलापन और भावनात्मक विनियमन का अभ्यास करने में बेहतर होती हैं। इस प्रभावशाली सत्र का संचालन श्रीमती हुमा कुरैशी और श्रीमती डॉ. स्वप्ना तिवारी ने किया |

८. विज्ञान का जादू

ज्ञानोदय विद्यालय के नायकन हॉल में पूर्व प्राइमरी की कक्षाओं के लिए विज्ञान का जादू गतिविधि का आयोजन किया गया | विज्ञान का जादू गतिविधि के माध्यम से बच्चों को जादू की अवधारणा को दिलचस्प तरीके से प्रस्तुत किया गया| इस गतिविधि में नींबू , गुब्बारे, खाने का सोडा, मोमबत्तियाँ, पानी, हल्दी आदि के प्रयोग द्वारा बैलून रॉकेट, लावा लैम्प, कलर चेंजिंग, वेकिंग वॉटर को दर्शाया गया | बच्चों को इन जादुई गतिविधियों को देखने में बहुत मजा आया | इस गतिविधि की प्रभारी थीं – श्रीमती चित्रा नजवाले और सुश्री हुमा नाज़ |

९. अंतरसदनीय क्रिकेट प्रतियोगिता

ज्ञानोदय विद्यालय के क्रिकेट मैदान में ९/११/२०२२ से १८/११/२०२२ तक एक अंतरसदनीय क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया | जिसमें क्रिकेट की ०८ टीमों (१२० खिलाड़ी) ने भाग लिया | पहला मैच ९/११/२०२२ को कक्षा ९ से १२ के लक्ष्मी हाउस एवं सरोजिनी हाउस के खिलाडियों के मध्य हुआ जिसमें सरोजिनी हाउस १७ रन से विजयी रहा| दूसरा मैच १०/११/२०२२ को टैगोर हाउस एवं विवेकानंद हाउस के खिलाडियों के मध्य हुआ जिसमें टैगोर हाउस ८ विकेट से जीता | फ़ाइनल मैच १७/११/२०२२ को

लक्ष्मी हाउस एवं टैगोर हाउस के मध्य मैच हुआ जिसमें लक्ष्मी हाउस ७ विकेट से विजयी हुआ|

जूनियर कक्षाओं के अंतर्गत कक्षा VI-VIII के विद्यार्थियों के मध्य पहला मैच ११/११/२०२२ को लक्ष्मी हाउस एवं सरोजनी हाउस के मध्य हुआ जिसमें लक्ष्मी हाउस १६ रन से विजयी हुआ | दूसरा मैच १२/११/२०२२ को टैगोर हाउस एवं विवेकानन्द हाउस के मध्य हुआ जिसमें टैगोर हाउस ५४ रन से विजेता बना | प्रतियोगिता का फाइनल मैच १७/११/२०२२ को लक्ष्मी हाउस एवं टैगोर हाउस के बीच हुआ जिसमें लक्ष्मी हाउस १० विकेट से जीता | इस प्रतियोगिता में अम्पायर की भूमिका श्री अमित यादव एवं श्री शोएब खान ने निभाई | इस प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों को प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर प्रदान करना, खेल भावना एवं नेतृत्व की क्षमता का विकास करना था|

१०. राज्य कराते प्रतियोगिता : ज्ञानोदय के विद्यार्थियों ने परचम लहराया

ग्वालियर के एल.एन.आई.पी.ई .में दिनाँक १९ नवंबर और २० नवंबर को आयोजित राज्य कराते प्रतियोगिता में सागर जिले का प्रतिनिधित्व करते हुए खुरई नगर के ज्ञानोदय विद्यालय के खिलाड़ी अरिहंत जैन, तरुण रावत एवं लक्ष्मण प्रसाद ने १४ से १७ आयु वर्ग में टीम काता स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में सागर जिले को कुल २४ पदक प्राप्त हुए जिनमें ३ स्वर्ण, ८ रजत और १३ कांस्य पदक शामिल हैं। कराते मुख्यकोच सेंसाईं संदीप अग्रवाल के नेतृत्व में सागर जिले के कुल २१ खिलाड़ियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लेकर सागर जिले का नाम रोशन किया जिसमें ज्ञानोदय विद्यालय को ३ स्वर्ण पदक, ४ रजत पदक एवं ७ कांस्य पदक प्राप्त हुए हैं।

सागर जिले का प्रतिनिधित्व करते हुए शुभम लिटोरिया, अमन सेन, चहक जैन, अरिहंत जैन ने रजत पदक, कृष्णा सिंह दांगी, आयुष दुबे, हर्ष कौशिक, चहक जैन, अरिहंत जैन ने अलग-अलग आयु एवं भार वर्ग में कांस्य पदक हासिल किए। मुख्य प्रशिक्षक सेंसाईं संदीप अग्रवाल ने बताया कि इस प्रतियोगिता में ३२ जिलों से ६ वर्ष से लेकर १७ वर्ष तक के लगभग ६०० खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया।

सागर जिले की टीम की इस उपलब्धि पर कराते एसोसिएशन ऑफ इंडिया के जनरल सेक्रेटरी शिहान रजनीश चौधरी जी, भारतीय कराते टीम के हेड कोच विश्वामित्र अवार्डी, शिहान जयदेव शर्मा जी, सचिव सेंसाईं आशुतोष दधीच जी, टेक्निकल डायरेक्टर सेसाईं परितोष शर्मा जी, मध्यप्रदेश खाद्य एवं बीज विकास निगम के अध्यक्ष श्री मुन्नालाल जी गोयल, प्रखर जैन, गुरुकुल संस्था अध्यक्ष श्रीमंत धर्मेंद्र सेठजी, हर्षिल सेठजी, ज्ञानोदय विद्यालय खुरई प्राचार्य डॉ. अभिनव शुक्ला जी के साथ सभी अभिभावकों और जिले के गणमान्य लोगों ने खिलाड़ियों और अमेचर कराते डेवलपमेंट एसोसिएशन को बधाई संदेश ज्ञापित किए।

११. अंतरसदनीय वाद-विवाद प्रतियोगिता

ज्ञानोदय एस.एम.वी.एम. हायर सेकेंडरी स्कूल, खुरई में अंग्रेजी विभाग के तत्वावधान में इंटर हाउस वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि विद्यालय ने कैम्ब्रिज प्रारूप में इस प्रतियोगिता का आयोजन किया | विद्यालय के प्राचार्य के कुशल मार्गदर्शन में इस वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया|इस प्रतियोगिता के लिए शिक्षकों द्वारा छात्रों को समुचित प्रशिक्षण दिया गया जिसके अनुसार विद्यार्थियों ने अभ्यास किया|इस अभ्यास सत्र के दौरान बच्चों को अनेक विषय दिए गए | इस प्रतियोगिता में तीन चक्र थे – **क्वाटर फ़ाइनल, सेमी फ़ाइनल एवं फाइनल |**

सेमी फ़ाइनल और फ़ाइनल के लिए प्रतियोगिता के विषय थे – अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मौलिक अधिकार नहीं है', कृत्रिम बौद्धिकता मानवीय मूल्यों को नष्ट कर रही है 'और 'क्या मोबाइल फोन वास्तव में अकादमिक शिक्षा को बढ़ाने में उपयोगी है?' २२/११/२०२२ को इस वाद विवाद प्रतियोगिता को अंतिम रूप से आयोजित किया गया | इस प्रतियोगिता में लक्ष्मी हाउस द्वितीय एवं टैगोर हाउस प्रथम स्थान पर रहा | सर्वश्रेष्ठ वक्ता का ख़िताब विवेकानंद हाउस की समृद्धि सोनी को एवं सबसे होनहार वक्ता का ख़िताब विवेकानंद हाउस के ही मयंक दांगी को मिला | लक्ष्मी हाउस के प्रतिभागियों में भव्याश्री मलैया ९ ब, कृतिका नेमा ९ ब और यशवंत नैक्य थे, वहीं टैगोर हाउस से साकेत ९ अ, याशिका कुशवाहा ९ अ, देवम ९ ब ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया | सरोजिनी हाउस से धरनश्री जैन ११ द, मनन जैन ११ ब, ऋषिता तिवारी ११ ब तथा विवेकानंद हाउस से प्रियांशी शर्मा ११ अ, समृद्धि सोनी ९ द, मयंक दांगी ११ अ ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया | इस प्रतियोगिता में अध्यक्षता रितुल साहू एवं ओम गौर ने की | इस प्रतियोगिता में निर्णायकों की भूमिका समन्वयक - डॉ. स्वप्ना तिवारी एवं श्रीमती देबोलिना ने निभाई | सभी छात्र-छात्राएँ, शिक्षकगण एवं विद्यालय के प्राचार्य इस प्रतियोगिता के साक्षी रहे।

१२. छोटा बाज़ार गतिविधि

१७ नवम्बर, २०२२ को ज्ञानोदय विद्यालय के बास्केटबॉल मैदान में मिनी बाज़ार गतिविधि का आयोजन किया गया जो गणितीय क्रिया पर आधारित थी | इस गतिविधि के लिए प्रतिभागियों को दो श्रेणियों – क्रेता और विक्रेता में विभाजित किया गया था | विक्रेता प्रतिभागियों की संख्या १०५ थी | इन्हें मनोरंजक संसार एवं सपनों का देश श्रेणियों में विभाजित किया गया | इस गतिविधि में कक्षा ३ एवं कक्षा ४ के विद्यार्थियों ने भाग लिया | ग्राहक की श्रेणी में लगभग ६० छात्रों ने भाग लिया जो कक्षा १ और कक्षा २ के थे | मनोरंजक संसार बाज़ार में कक्षा १ और २ के विद्यार्थियों ने पाँच दुकानें लगायीं जिसमें गुब्बारे, खिलौने, चॉकलेट, स्टेशनरी का सामान और शिल्प से सम्बंधित वस्तुएँ बेची गयीं |

इस गतिविधि के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि विद्यार्थी कुल राशि की गणना करने में सक्षम हैं | सपनों का देश श्रेणी के अंतर्गत कक्षा ३ और ४ के विद्यार्थियों ने ६ दुकानें लगायीं जिसमें मास्क, पेंसिल बॉक्स, पानी की बोतलें, गणित की सामग्री एवं खेलकूद से सम्बंधित वस्तुएँ रखी गयीं |

इस गतिविधि का उद्देश्य विक्रेताओं और ग्राहकों के बीच सौदेबाजी, बातचीत, गणना और संचार से परिचित कराना था|

इस गतिविधि में निर्णायक की भूमिका श्री आदित्य दुबे एवं सुश्री चंचल पचौरी ने निभाई |

१३. सुडोकू प्रतियोगिता

दिनांक १३/११/२०२२ दिन गुरुवार को गणित विभाग द्वारा सुडोकू प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता में कक्षा ९ वीं एवं ११ वीं के विद्यार्थियों ने भाग लिया । इसका उद्देश्य छात्रों की तार्किक क्षमता का विकास करना था । इसमें २२ छात्रों ने भाग लिया तथा चार छात्र विजयी रहे । इस प्रतियोगिता में वंश रघुवंशी कक्षा ११ स ने प्रथम तथा मयंक दांगी ११ अ, आगम जैन ११ स तथा पीयूष हिंदुजा ११ स ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया ।

इस प्रतियोगिता में निर्याणक की भूमिका नरेंद्र झा ने निभाई।

१४. कंप्यूटर नेटवर्किंग साक्षरता सत्र –

ज्ञानोदय विद्यालय में कंप्यूटर नेटवर्किंग के क्षेत्र में छात्रों के दृष्टिकोण का विस्तार करने के लिए, ३० नवंबर २०२२ को एक विशेषज्ञ सत्र का आयोजन किया गया | इस सत्र में लगभग ५० छात्रों ने भाग लिया | यह विषय छात्रों के पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित है | इसलिए छात्र इससे विशेष रूप से लाभान्वित हुए | इस सत्र का उद्देश्य छात्रों में कंप्यूटर के क्षेत्र में रूचि बढ़ाना था | यह प्रशिक्षण श्री शोएब खान द्वारा दिया गया |

१५. औद्योगिक भ्रमण

१९ नवम्बर २०२२ को ज्ञानोदय विद्यालय ने ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के वाणिज्य विषय के छात्रों के लिए एक औद्योगिक यात्रा का आयोजन किया | विद्यार्थियों को संजय इंडस्ट्रीज खुरई को दिखाने ले जाया गया |

ऐसी यात्राएँ उद्योगों के बारे में जानकारी, उनकी कार्यप्रणाली एवं पर्यावरण के बारे में जानने का अवसर प्रदान करती हैं | इस यात्रा का उद्देश्य छात्रों को कार्यात्मक अवसर प्रदान करना एवं प्रत्यक्ष रूप से उद्योग का दर्शन कराना था कि कैसे उद्योग अपनी निर्माण गतिविधियों को अंजाम देता है | इस यात्रा ने छात्रों को अपने वास्तविक कामकाज के व्यावहारिक ज्ञान के साथ व्यापार संचालन के अपने सैद्धांतिक ज्ञान को जोड़ने में मदद की | छात्रों को विभिन्न प्रकार के उद्योगों, व्यापार, संगठन के रूपों, सिद्धांतों और प्रबंधन की तकनीकों, उत्पादन और ऊपरी लागत आदि से परिचित कराया गया |

१६. करियर काउंसलिंग

ज्ञानोदय विद्यालय समय - समय पर अपने छात्रों को भविष्य की दिशा और दशा निर्धारित करने में सहयोग करने के उद्देश्य से करियर काउंसलिंग का आयोजन करता रहा है | २५ नवम्बर २०२२ को इसी उद्देश्य से एक करियर काउंसलिंग का आयोजन किया गया जिसमें उच्च शिक्षा, आगामी CUET परीक्षा एवं भविष्य निर्धारण हेतु दिशा प्रदान की गई| ऋषभ अकादमी के शिक्षक श्री दिलीप पायरा, प्राचार्य श्री असरफ खान एवं सुश्री प्रतीक्षा जैन ने ज्ञानोदय के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया |

१७. बालदिवस समारोह

१४ नवम्बर २०२२ को विद्यालय में बालदिवस समारोह आयोजित किया गया | इस अवसर पर विद्यालय में अनेक खेल गतिविधियाँ हुईं | इस अवसर पर हिंदी नाटक 'मस्ती की पाठशाला' का प्रस्तुतीकरण किया गया | इसमें शिक्षकों ने बच्चों का अभिनय किया | इस अवसर पर अंग्रेजी विभाग के श्री राकेश बहादुर ने व्यंग्यपूर्ण कविता सुनाई | इस अवसर पर नृत्य शिक्षिका सुश्री मेघना एवं साथियों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया | समारोह में मंच संचालन का कार्यभार श्री सचिन तनेजा एवं सुश्री नवनी जी ने संभाला | इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य जी ने परिवर्तन प्रकृति का नियम है की मूल भावना से ओतप्रोत एक सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण कविता सुनाई जिसका शीर्षक था 'धीरे से' | प्राचार्य जी ने इस कविता के माध्यम से जीवन के परिवर्तनों के मध्य वर्तमान में जीने का सन्देश दिया | सम्पूर्ण समारोह में विद्यार्थियों में बहुत उत्साह देखने को मिला |

१८. अंतरसदनीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

हमारी जन्मभूमि हमें अकथनीय मिठास से मंत्रमुग्ध करती है और हमें कभी यह नहीं भूलने देती कि हम इसके हैं | हमारी जन्मभूमि से हमारा जुड़ाव स्वाभाविक है | अपनी जन्मभूमि से संबंधित ज्ञान भी हमें निश्चित रूप से होना चाहिए | इसी भावना को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम प्रभारी श्री रूपेश मिश्रा ने ज्ञानोदय विद्यालय के नायकन हाल में 'भारत का हृदय हमारा मध्यप्रदेश' शीर्षक से एक अंतरसदनीय प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया | प्रतियोगिता में विवेकानंद सदन विजयी रहा | इस प्रतियोगिता में निर्णायकों की भूमिका श्री जयदेव चतुर्वेदी एवं श्री दिलीप पायरा ने निभाई | कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सामान्य ज्ञान का विकास करना और छात्रों को उनके मूल राज्य के बारे में जिज्ञासु बनाना था |

१९. खेल खेल में सीखना

यदि आप खेल खेलते हैं तो जीवन अधिक मजेदार हो जाता है और जब बच्चों की बात हो तो कहना ही क्या ! वास्तव में खेल बच्चों एवं बड़ों के लिए मनोरंजन का एक साधन है | खेल से जब शिक्षा जुड़ जाती है तो इसका महत्त्व और बढ़ जाता है | इसी अवधारणा की दृष्टि से १९ नवम्बर २०२२ को विद्यालय में पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए 'खेल खेल में सीखना' गतिविधि का आयोजन किया गया | इस गतिविधि का उद्देश्य बच्चों में कौशल और आदतों का विकास करना था | इस गतिविधि की प्रभारी श्रीमती मनप्रीत सलूजा एवं श्री मती कविता शर्मा थीं |

२०. बास्केटबाल प्रतियोगिता

१५ नवम्बर २०२२ से १९ नवम्बर २०२२ तक लोक शिक्षा संचालनालय के तत्त्वाधान में ६६ वीं राज्य स्तरीय स्कूल खेलकूद प्रतियोगिता २०२२ के अंतर्गत बास्केटबाल प्रतियोगिता का आयोजन ग्वालियर मध्य प्रदेश में किया गया| इस प्रतियोगिता में ज्ञानोदय विद्यालय के मास्टर निमित सतभैया, तनिश जैन, अक्षत जैन एवं स्तुति संघाई ने भाग लिया और क्वाटर फ़ाइनल तक खेलकर सागर जिले का प्रतिनिधित्व किया|

२१. बाल - पिकनिक यात्रा

पिकनिक, आनंद और मस्ती का एक अच्छा स्रोत है जिसमें हम सीखते हुए एक दिलचस्प सैर का अनुभव करते हैं | यदि यह सैर नन्हें नन्हें बालकों की हो, तो कहना ही क्या! ऐसा लगता है मानो जमीं पर जैसे स्वर्ग उतर आता है | ज्ञानोदय विद्यालय ने पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के नन्हें विद्यार्थियों के लिए एक ऐसी ही पिकनिक यात्रा का आयोजन किया | वास्तव में शिक्षा ही काफी नहीं, बच्चों के पास धूप, स्वतंत्रता और खेलने का समय भी होना चाहिए | ज्ञानोदय विद्यालय विद्यार्थियों की शिक्षा के साथ - साथ खेल पर भी विशेष महत्त्व देता है जिससे उनका सर्वांगीण विकास हो सके | इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस पिकनिक का आयोजन किया गया था | सुबह ९ बजे प्रार्थना के साथ ही बच्चे पिकनिक के लिए रवाना हुए | बच्चे इस यात्रा के लिए बेहद उत्साहित थे और कार्यक्रम स्थल पर पहुँचने तक बस में गाने गाते रहे | गंतव्य स्थान पर पहुँचकर वे हरे भरे लॉन पर चलने लगे | उन्होंने वहाँ कुछ खेल भी खेले | एक थका देने वाली और मस्ती भरी सुबह के बाद हम सभी दोपहर के भोजन के लिए निकले, जहाँ सभी शिक्षकों और बच्चों ने तरह-तरह के भोजन से भरे अपने टिफिन का आनंद लिया | समूह फोटो लेने के समय बच्चों ने अलग अलग तरीकों से पोज देकर फोटो खिंचवाए | बच्चों ने दोबारा यहाँ आने की इच्छा जताई | वास्तव में सभी के लिए यह एक यादगार दिन था | नन्हें विद्यार्थियों और शिक्षकों के मध्य संबंधों को प्रगाढ़ करने का इससे अच्छा और क्या अवसर हो सकता था |

विद्यार्थी कोना

१. खोया पाया

जो चला गया उसका क्या एहसास करें।
जो रह गया पास उसको और पास करें।
बहुत दूर तक चलते हैं ज़िन्दगी के सिलसिले ।
इन रहगुजर में न सुबह-शाम खराब करें।
जो मंजिल है बस उसे पाना है |
पत्थरों का क्या हम हिसाब करें।
बहुत दुख पहुँचाते हैं कंटक राहों के
चलो इन्हें छोड़ें एक नई राह तैयार करें।

-आरुषी राजपूत
कक्षा ९ ब

२. बचपन

बचपन ही होता है बहुत खास
उसमें होता है कुछ अलग सा एहसास
बाल लीलाओं में मग्न हम
करते हैं कई प्रयास
बचपन ही होता है बहुत खास
ज़िन्दगी की परेशानियाँ तब नहीं सतातीं
मजबूरियाँ तो कभी नज़दीक भी नहीं आतीं
सबका दुलार और सबके साथ बिताईं घड़ियाँ
अब तो कभी लौट कर भी नहीं आतीं
अब तो न दोस्तों के पास है न परिवार के पास
वो समय है दोस्त जो न बचता किसी के पास
सोचती हूँ वो समय काश !कभी कभी जाता ही नहीं
वो सभी का साथ और प्यार पाने को तड़पाता ही नहीं
मैं दिल से चाहती बचपन फिर लौट आए
चलो उन पलों को फिर से जिया जाए |

ऋषिका श्रीवास्तव
कक्षा ९ स

३. हँसी मजाक

हँसी मजाक हमारे जीवन का वह भाग है, जो हमारे जीवन को खुशियों से भर देता है और हम कभी उदास नहीं होते | लेकिन यदि किसी चीज़ की अति हो जाए तो वह अच्छी नहीं होती | ठीक उसी प्रकार यदि हँसी मजाक एक सीमा तक हो तो ही वे अच्छे लगते हैं और हमारी ज़िन्दगी में रंग भर देते हैं | यदि हँसी मजाक हमारी ज़िन्दगी में न हो तो ज़िन्दगी बेरंग सी हो जाती है | हँसी मजाक वो दवाई है जो तनाव व उदासी जैसी बीमारियों को दूर कर देती है | हँसी मजाक करने से जीवन का मजा दोगुना हो जाता है | हँसते रहने से मन में कभी घबराहट नहीं होती व हँसते रहने से हर पल यादगार हो जाता है |

-रिया ठाकुर
कक्षा ८ वीं स

४. सैनिक की कहानी

नहीं सोचते, कब लौटेंगे घर
सीमा पर रक्षा करते दिन –रात भर
घर में शादी हो
या माँ हो बीमार
नहीं लौटते घर रहते सीमा पर तैयार
देश के बच्चे पढ़ सकें
और देश हमारा बढ़ सके
इसलिए करते बलिदान
मर मिटे उस भूमि पर
ऐसे सैनिक महान
जय हिन्द !

-मानसी चौरसिया
कक्षा ६ स

५. पहेलियाँ

१. मैं हरी मेरे बच्चे काले, मुझे छोड़ मेरे बच्चे खा ले
२. ऐसी कौन से चीज़ है, जो हमारे साथ २४ घंटे रहती है और बाद में चली जाती है ?
३. वह कौन सी चीज़ है, जिसे लडकियाँ पहनती हैं और लड़के खाते हैं ?
४. वह क्या है जो सुखाते वक्त गीला हो जाता है ?
५. हमने देखा जहाँ -जहाँ, मिली घूमती वहाँ -वहाँ
उत्तर –१. इलाइची २. दिनांक ३. लौंग ४. तौलिया ५. नज़र

- श्रुति मिश्रा कक्षा ६ स

६. परीक्षा परिणाम का भय

रिजल्ट आए, मटक मटक,
पापा मारे पटक पटक
साँसे जाएँ अटक अटक
माँ का दिमाक सटक सटक
दिल मेरा गोते खाए
बोडी मेरी सूजी जाए |

-यशवंत पाल
कक्षा ४ ब

७. सत्य का महत्त्व

सत्य बोलना हमारे लिए बहुत ज़रूरी है | यह एक अच्छी आदत भी है सत्य का अर्थ है – सदा अच्छी राह पर चलना | हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी हमेशा सत्य का साथ देते थे | वे सदा सत्य बोलते थे | इसलिए उन्हें सत्यवादी के नाम से जाना जाता है | सत्य बोलकर भी हम अपनी मंजिल तक पहुँच सकते हैं | सत्य से हम किसी व्यक्ति के साथ हो रहे अन्याय को रोक सकते हैं |

सत्य को कोई भी छिपा नहीं सकता | एक न एक दिन तो वह सामने आ ही जाता है | यह इसलिए संभव है क्योंकि यह सकारात्मक है | न्यायाधीश, अधिवक्ता जैसे लोगों के जीवन में सत्य बहुत महत्त्व रखता है | सत्य हमें कहाँ से कहाँ ले जाता है, हमें यह पता ही नहीं चलता | इस पूरे विश्व में लगभग ३० से ४० प्रतिशत लोग ही सत्य का साथ देते होंगे मेरे अनुभव से सत्य में ही हमारा लक्ष्य है और झूठ में सिर्फ और सिर्फ बर्बादी |

-मान्या सिंह बिसेन
कक्षा ६ स

आज के युग में शिक्षा का महत्त्व

शिक्षा एक ऐसा महत्त्वपूर्ण उपकरण है जो सबके लिए जरूरी है।शिक्षा से ज्ञान की प्राप्ति होती है|ज्ञान आज के युग में सबके पास होना चाहिए क्योंकि ज्ञान के बिना एक आम आदमी समाज में नहीं रह पाता और जिसके पास ज्ञान होता है वह अपने जीवन में सफलता पाता है।हमें शिक्षा लेने के लिए कभी भी पीछे नहीं हटना चाहिए।शिक्षा और ज्ञान के बिना जीवन में कुछ नहीं कर पाते। ज्ञान ही सब कुछ है,ज्ञान के बिना कुछ नहीं है |शिक्षा से ज्ञान मिलता और ज्ञान से जीवन का कल्याण होता है। कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में अरुणाचल से लेकर पश्चिम में गुजरात तक शिक्षा की आवश्यकता है।आज के युग में शिक्षा का महत्व इतना है कि आपको हर क्षेत्र में शिक्षा और ज्ञान की आवश्यकता पड़ेगी।व्यापार में शिक्षा की जरूरत पड़ेगी, नौकरी करना हो तो शिक्षा की आवश्यकता पड़ेगी,खेती करना हो तो भी शिक्षित होना आवश्यक है। इसलिए कहते हैं "विद्या ददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्। पात्रत्वात् धनामप्रोति धनात धर्म: तत सुखम् अर्थात विद्या विनय (विनम्रता)देती है,विनय से पात्रता (योग्यता) आती है,पात्रता से धन आता है और धन से धर्म होता है और धर्म से सुख प्राप्त होता है। इसलिए स्वयं शिक्षित बने और दूसरों को भी जागरूक और शिक्षित करें| कभी भी आपको कोई नई बात जानने की मौका मिले तो उसका लाभ उठाये एवं ज्ञान के जिज्ञासु बने क्योंकि पढ़ेगा भारत तभी तो बढ़ेगा भारत।

-अनिमेष जैन बारहवीं (कला)

सफलता की कहानी

एक बार एक इंजीनियरिंग कॉलेज की हॉस्टल में तीन दोस्त पढ़ते थे।उनमें से एक था राम दूसरा था रमेश और तीसरा था श्याम।उनमें से सबसे होशियार था राम और जो दूसरा दोस्त रमेश था उसको फोटोग्राफी का शौक था। वह फोटोग्राफर बनना चाहता था और तीसरे श्याम को इंजीनियर बनना था|पर वह डरता था और दिन भर भगवान से बोलता था कि मुझे बस पास करवा देना। उसी कॉलेज में एक चतुरदास रहता था वह हर चीज को रटता रहता था और राम समझ कर पढ़ता था।जब वह कॉलेज के पहले साल में थे तो राम प्रथम आया,पर रमेश के कम अंक आए और श्याम दो विषय में फेल था। दूसरी और तीसरी साल फिर वैसा ही हुआ। फिर जब चौथी मतलब आखिरी साल थी वह एक दिन पढ़ रहे थे, तो राम ने दोनों से कहा कि तुम लोग जो विषय पढ़ना चाहते हो वही पढ़ो।काबिल बनो,सफलता तुम्हारे पीछे भागेगी| पर श्याम नहीं समझा| तो उन दोनों ने एक खेल खेला, उस कॉलेज में मंत्री जी आने वाले थे तो वहाँ कार्यक्रम होने वाला था। तो वहाँ पर एक हिंदी के बहुत अच्छे शिक्षक थे उन्होंने इस कार्यक्रम में मंत्री जी के सम्मान में एक भाषण लिखा और उन्होंने चतुर को चुना और भाषण देने को कहा फिर जब शिक्षक भाषण का पेपर चतुर को देने जा रहे थे|राम और रमेश ने उनसे कहा कि आपको प्रधानाचार्य ने याद किया तो उनने उन्हें पेपर पकड़ा दिया और प्रधानाचार्य के ऑफिस की ओर बढ़ गए। फिर उन दोनों ने उस भाषण में से कुछ शब्द बदल दिए और चतुर को दे दिए। फिर चतुर तो हर चीज रटता था तो उसने उस भाषण को भी रट लिया। फिर वह दिन आया और मंत्री जीआये और चतुर को भाषण देने को कहा जब उसने भाषण देना चालू किया, तो सारे लोग हँसने लगे क्योंकि उस पर मंत्री जी के बारे में गलत लिखा था|तो मंत्री जी ने उसे चाँटा मार दिया और वहाँ से चले गए।फिर जब चतुर को पता चला तो रात में उसके पास छत पर गया और कहा तुमने मेरे साथ बहुत गलत किया है| आज मैं तुम्हें एक चैलेंज देता हूँ, आज से आठ साल बाद हम चार यहाँ आयेंगे और देखेंगे कौन कितना आगे बढ़ा।फिर वार्षिक परीक्षा हुई तो राम को कॉलेज में सबसे ज्यादा अंक आए और चतुर के दूसरे नंबर पर और रमेश और श्याम पास हो गए।उसके पहले कॉलेज में एक कैंप आया तो उसमें रमेश चुना गया परंतु रमेश फोटोग्राफर बनना चाहता था तो राम ने उसे समझाया कि तुम अपने पापा से बात करो।रमेश ने पापा से बात की और उसके पापा मान गए और जो लैपटॉप लाए थे उसके बदले में कैमरा लाने को कहा।राम ने श्याम को समझाया कि सर के सामने डरना मत उनका डटकर सामना करना| तो उसने वैसा ही किया तो उसे नौकरी मिल गई।फिर आठ साल बाद जब चतुर ने दोनों श्याम और रमेश को बुलाया और कहा कि आज वह दिन जिस दिन तुम लोगों से मुझे बेइज्जत होना पड़ा था।फिर तीनों राम के पास गए और राम से मिले और वह तीनों बहुत खुश हुए।फिर चतुर बोला आजकल तुम क्या कर रहे हो?तो राम ने कहा कि बच्चों को पढ़ाता हूँ तो चतुर बोला- आज मुझे देखो मैं कहाँ तुम कहाँ| तो थोड़ी देर बाद चतुर के मोबाइल पर एक मैसेज आया उसमें एक चित्र था और लिखा था यह दुनिया का सबसे बड़ा वैज्ञानिक है पर उस चित्र में राम की फोटो थी जिसको देखकर वह डर गया और राम से अच्छी तरह से बात करने लगा। इस कहानी से हमें यह पता चलता है कि हमें सफलता के पीछे नहीं भागना चाहिए।काबिल बनो सफलता तुम्हारे पीछे-पीछे अपने आप भागेगी| जो आपको आगे जाकर ठीक लग रहा है, वही करिए।

-कृष्णा दांगी सातवी 'स'

शिक्षक कोना

१. दिमाग से हम सभी विकसित होते जा रहे हैं ॥
पर दिल के सारे मामले संकुचित होते जा रहे हैं ॥

आज स्वंय के पास स्वंय के लिए समय नहीं,
दूरियाँ खुद से खुद के बीच होती जा रही हैं ॥

आंखों में धुंधलापन, और बालों में सफेदी ,
समय से पहले ही बूढ़े होते जा रहे हैं ॥

धरती से जुड़े लोग धरती के काम को छोड़कर,
यांत्रिक कार्य के लिए तैयार होते जा रहे हैं ॥

पैसे-शोहरत की चोट से रिश्ते-नाते आज चकनाचूर होते जा रहे हैं।।
पैसे-शोहरत की चाह में हम अपनों से ही दूर होते जा रहे हैं।।

-श्रीमती मनप्रीत सलूजा
कनिष्ठ शिक्षिका

२. मध्यप्रदेश गौरव हरिसिंह गौर

सरस्वती लक्ष्मी दोनों ने दिया तुम्हे सादर जय पत्र,
साक्षी है हरिसिंह ! तुम्हारा ज्ञान दान का अक्षय सत्र !

-मैथिली शरण गुप्त

डॉक्टर गौर की विलक्षण प्रतिभा पर राष्ट्र कवि स्वर्गीय मैथिली शरण गुप्त द्वारा लिखित ये पंक्तियांपूरी तरह चरितार्थ होती हैं उन पर। राष्ट्र का धन कारखाने और सोना चांदी की खान में नहीं होता, वहराष्ट्र के स्त्री पुरुषों के मन और देह में समाया होता है|
यह विचार थे - शिक्षा मनीषी, सेवाभावी, संविधान निर्माता और सागर शहर को महासागर सी पहचान देने वाले डा. हरि सिंह गौर के।कहते हैं कि प्रतिभा कभी परिस्थितियों की मोहताज नहीं होती| वह हर हाल में निखर कर सामने आती है| यही दृष्टि गोचरहोता है, उनके जीवन दर्शन से|
सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ गौर का जन्म तंग हाली से जूझते तल्ख़ सिंह आत्मज मानसिंह के परिवार में २६ नवंबर १८७० को हुआ था।
सागर में शनिचरी टोरी में पले बढ़े हरि सिंह गौर की प्रतिभा इतनी थी कि कटरा के स्कूल से पाँचवीं कक्षा पास कर उन्होंने दो वर्ष में ही नगरपालिका स्कूल से आठवीं की परीक्षा पास कर ली, वह भी पहले दर्जे के साथ। इसके बाद वे मैट्रिक करने जबलपुर चले गए, लेकिन एक अनावश्यक से मुकदमे ने उनके दो वर्ष बिगाडदिए, जिससे वे दसवीं में फेल हो गए और सागर वापिस लौट आए । मगर इस का परिणाम यह हुआ कि उन्होंने फिर परीक्षा दी जिसमें उन्होंने पूरे प्रांत में प्रथम स्थान प्राप्त किया और उन्हें ५० रुपए नकद राशि और एक चांदी की घड़ी छात्रवृत्ति में मिली।

आगे की शिक्षा के लिए उन्होंने हिस्लॉप कॉलेज नागपुर में प्रवेश लिया। इसके बाद तो उन्होंने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। इसके बाद बैरिस्टर की पढ़ाई के लिए उनकेभाई ने उनको इंग्लैंड की कैंब्रिज यूनिवर्सिटी भेजा।
गणित उनका प्रिय विषय था और वे अक्सर गणित की प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे। लेकिन कभी किसी भी प्रतियोगिता का परिणाम घोषित नहीं हुआ। बहुत समय बाद जब वे डी.लिट कर रहे थे, तब एकभोज में शामिल हुए जहाँ उन्हें पता चला कि वे सभी प्रतियोगिताओं में अब्बल आए थे और अंग्रेजों को किसी अश्वेत भारतीय को विजेता को घोषित करना अपमानजनक लगता था। इसी प्रकार इन्होंने कुलपतिपुरस्कार के लिए अपनी कविता भेजी जो सर्वश्रेष्ठ थी और इसका भी परिणाम घोषित नहीं किया गया। यद्यपि बाद में इन्हे रॉयल सोसायटी का सदस्य चुना गया।
१८९१ में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में कैंब्रिज मेंएक प्रतिनिधि मंडल भेजा और दोनों विश्वविद्यालयों के सभी वक्ताओं में डॉ गौर को सर्वश्रेष्ठ घोषितकिया गया। एक व्यक्ति चाह ले, तो आसमान की ऊँचाई भी कम पड़े, इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण डॉ गौर हैं, जिन्होंने अंग्रेजी, इतिहास, दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र के साथ लॉ की पढ़ाई भी की। १९०५ में उन्होंने ट्रिनिटी कॉलेज से और बाद में डबलिन कॉलेज से डी. लिट की उपाधि प्राप्त की।
डॉ गौर की गिनती २०वीं सदी के सर्वश्रेष्ठ कानूनविद, शिक्षाविद, साहित्यकार, राजनीतिज्ञ और महादानी के रूप में होती है। देश दुनिया में अपनी सेवाएँ देने के बाद भी उनके मन में अपनी मातृभूमि सागर के शैक्षणिक पिछड़ेपन की वेदना बनी रही। दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्थापक रहे डॉ गौर सागर को शिक्षा जगत में ऊंचाई
प्रदान करने के लिए १९४६ में सागर विश्वविद्यालय की स्थापना की जो देश का १८ वां और किसी एकव्यक्ति के दान से स्थापित होने वाला एकमात्र पहला विश्वविद्यालय है। उस समय डॉ गौर ने २० लाख रूपए नकद और २ करोड़ की संपत्ति विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु दान दिए थे | करीब १३७२ एकड़ मैं फैले इस शिक्षा के मंदिर का नामकरण सरकार ने १९८३ में डॉ हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय कर दिया। जिसे २००८ में केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्ज़ा दिया गया। डॉ गौर की सेवाओं के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए भारतीय डाक तार विभाग ने १९७६ में एक डाक टिकट भी जारी किया ।

डॉ गौर को शत शत नमन।

-डॉ स्वप्ना तिवारी [समन्वयक]

३.पचमढ़ी की यात्रा [यात्रा वृत्तान्त]

यात्रा करना मेरा शौक रहा है इसलिए मैं किसी भी कीमत पर पचमढ़ी यात्रा को ना नहीं कहने वाला था । आखिरकार मुझे वहाँ जाने का मौका मिला| चूंकि मेरा पहले भी अपने कॉलेज के दिनों में एन.सी.सी के कैंपो में ट्रेकिंग का काफी अनुभव रहा इसलिए मुझे वहाँ ट्रेकिंग के दौरान ज्यादा दिक्कत नहीं हुई|

मैं स्कूल में नया था इसलिए छात्रों के साथ संबंध बनाना सबसे महत्त्वपूर्ण था। न तो छात्र मुझे बहुत अच्छी तरह जानते थे,न मै उन्हें जानता था | इसलिए मेरे सामने पहली चुनौती शिक्षक- छात्र संबंध बनाने की थी ।

मैं पूरी तरह से खुश हूँ क्योंकि मैंने ऐसा किया। सतपुड़ा की नरम ठंडी हवा,हमें अपने पुराने दिनों की याद दिलाती थी| टेन्ट में बिना पंखे, बिना बिजली के रहना | जब हम बिना बिजली के छत पर सोया करते थे, तो बचपन की यादें ताजा हो जाती थीं| मैने समय -समय पर पचमढ़ी एवं सतपुड़ा के भूगोल के बारे में बच्चों को अवगत कराया| मैंने बच्चों के साथ महादेव मंदिर, राजेंद्र गिरि, संगम ट्रेक, पांडव गुफाएँ , बाइसन म्यूजियम, बी जलप्रपात और कैंप फायर में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और उन्हें जीवन में हर पल को आनंद से जीने के लिए प्रेरित किया।

बन्दर की तरह रेंगना, बंजी जम्पिंग, पर्वतारोहण और विभिन्न गतिविधियों के दौरान मैंने बच्चों को खतरों को मापने, जोखिम लेने की क्षमता और उनसे साहस से निपटने के बारे में सिखाया और अपने कुछ जीवन के अनुभवों को साँझा किया| मेरा ये अनुभव बहुत ही शानदार रहा और मेरे जीवन की किताब में एक सुनहरी यादों का अध्याय जोड़ गया|

प्यारे बच्चों के साथ बिताए हुए ये पल, मैं कभी नहीं भूलूँगा।

-श्री रूपेश गुरु

४. जागो वीर

जागो वीर कहे जवानी,
बना नहीं लहू तुम्हारा पानी |
बन के फट जा तू सुनामी,
फिर न रहे अमेरिकन न पाकिस्तानी
जागो वीर कहे जवानी,
बना नहीं लहू तुम्हारा पानी |
इस देश को दो अपनी कुर्वानी
और दो गाँधी सुभाष को सलामी
जो मिलेगी देश को आपकी कुर्वानी
तो देश में न होगी कभी गुलामी
जागो वीर कहे जवानी,
बना नहीं लहू तुम्हारा पानी |
जब तेरे खून में होगी रवानी,
फिर कहाँ से आएगी गुलामी |
बन जाएगी फिर तेरी कहानी
और दुनिया हो जाएगी तेरी दीवानी
जागो वीर कहे जवानी,
बना नहीं लहू तुम्हारा पानी |

-डॉ संजय तिवारी

५. एहसास

खुशियाँ इतनी तो नहीं
कि किसी का दिल जीत सकें
लेकिन कुछ पल ऐसे
जरूर छोड़ जाएंगे
कि भूलना आसान नहीं होगा |
कल न हम होंगे
न कोई गिला होगा
सिर्फ सिमटीं हुईं
यादों का सिलसिला होगा |
जो लम्हे हैं चलो हंसकर बिता लें |
जाने कल ज़िन्दगी का
क्या फलसफा होगा |

- श्री आर .एल .शाह

६. सोच

अगर आप सोचते हैं कि आप हार गए हैं,
तो आप हारे हैं |
यदि आप सोचते हैं कि,
आपमें हौसला नहीं है |
तो सचमुच नहीं है |
यदि आप जीतना चाहते हैं,
मगर सोचते हैं कि
जीत नहीं सकते,
तो निश्चित है आप नहीं जीतेंगे |
सफलता की शुरूआत
इंसान की इच्छा से होती है |
ये सब हमारी सोच पर निर्भर है
कि आप जीतेंगे या नहीं |
हौसला रखेंगे,
तो मंजिल मिलेगी ही
आज नहीं तो कल |

-श्रीमती कृतिका तिवारी

७. सृजन

स्वेतकण आभा प्रदीप्ति,
कर सृजित नव रंग नीति |
व्यर्थ कंटक मग बने क्यों,
जीव -जीवन सार गर्भित |
भूत स्वर ,कल कोकिलों में,
भाव में ,नव कोंपलों में |
फिर बंधे, तू बांध मत,
कर जोड़, करना है प्रगति |
हे सिन्धु, हिमगिरि, हे अचल,
भागीरथी, हे पुण्य निश्छल |
जीवन सरल, हे भावगम्य,
तुमको नमन मेरी प्रकृति |
मन रहे न, याचना में,
व्यर्थ में, भ्रम कामना में |
कर सृजन, नित मार्ग गढ़
नव अंकुरों में, शौर्य भर |
है कुछ कहाँ, अगम्य दुर्लभ ?
धीर मन, सब है समर्पित |
छंट रहा अब सब कुहासा,
सब तरफ आशा ही आशा |
नव बसंत करता निमंत्रित,
ज्योति पथ तुझको बुलाता |
कर्तव्य कर, निर्माण कर,
फिर ईश में कर दे समर्पित |

-डॉ. कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव 'हमराही'

अन्य –

विचार विमर्श

विषय - 'हिंदी के बढ़ते चरण' प्रिय विद्यार्थियों विचार विमर्श के इस स्तम्भ में आप दिए गए विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं।आप अपने विचार मंगल फॉन्ट, वर्ड फ़ाइल में २० तारीख तक भेज सकते हैं। आपके लेख को अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

सूचना

प्रिय विद्यार्थियों आप आगामी अंक के लिए अपनी स्वरचित, मौलिक कहानी, कविताएँ, लेख आदि प्रत्येक माह की १५ तारीख तक भेज सकते हैं | श्रेष्ठ रचनाओं को पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा|

पाठक अपनी रचनाएँ -

kirtiwardhanshrivastav@gmail.com पर भेजें |

अथवा 9179961170 पर वाट्सएप्प करें |

ज्ञानोदय शिक्षण उद्देश्य

"हम, प्राचार्य, कर्मचारी, और ज्ञानोदय के छात्र अंग्रेजी और हिंदी, तार्किक सोच, सामाजिक रूप से स्वीकार्य व्यवहारवाद को व्यक्त करने और समझने की क्षमता विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, विद्यालय का उद्देश्य है कि विद्यार्थियों में "अहिंसक" नैतिक मूल्य, शारीरिक सहनशक्ति, कला में उत्कृष्टता और संस्कृति, अच्छे और बुरे के बीच न्याय करने की क्षमता, विकसित हो वे आत्मनिर्भर बनें|

प्रतियोगिता

कहानी पूरी करो प्रतियोगिता

प्रिय विद्यार्थियों इस स्तम्भ में आपको कहानी की प्रारंभिक पंक्तियाँ दी जा रही है | इसके बाद की कहानी आपको अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग कर के पूरी करनी है | कहानी ऐसी लिखें जो रोचक एवं उद्देश्य पूर्ण हो | कहानी का शीर्षक भी लिखें |

अभी कल ही तो मृदुला से बात हुयी थी | वह बहुत साहसी थी | हमेशा खुश रहती थी मगर पता नहीं आज दुखी लग रही थी ---------------

कविता पूरी करो प्रतियोगिता

प्रिय विद्यार्थियों इस प्रतियोगिता में कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई है | इन्हें आगे बढ़ाते हुए अधूरी कविता पूरी करो और उसका शीर्षक भी लिखो |

ज्ञानोदय स्कूल हमारा, हम सबको अति प्यारा है

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता के अंतर्गत दिए गए विषय पर एक चित्र बनाना है | सर्वश्रेष्ठ चित्र को आगामी अंक में स्थान दिया जाएगा |

विषय - आओ पढ़ें हम

हिंदी समाचार

विश्व हिंदी सम्मेलन -

इस बार '**१२ वां विश्व हिंदी सम्मेलन**' का आयोजन फिजी में किया जा रहा है। यह पहला मौका है जब पैसिफिक क्षेत्र के किसी देश में यह सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। यह सम्मेलन अगले साल १५ से १७ फरवरी तक भारतीय विदेश मंत्रालय और फिजी सरकार द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। इस सम्मेलन में भारतीय विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व करेंगे। यह सम्मेलन फिजी के नाडी शहर में होगा।

विश्व हिंदी सम्मेलन के शुभंकर का चयन एक विश्वस्तरीय प्रतिस्पर्धा के माध्यम से किया गया है। इसके लिए १४३६ प्रविष्टियां प्राप्त हुई थीं और इनमें से ७८ प्रविष्टियों पर अंतिम रूप से विचार करने के बाद मुंबई के मुन्ना कुशवाहा द्वारा परिकल्पित शुभंकर का चयन किया गया। विजेता को ७५ हजार रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। विदेश राज्य मंत्री ने कहा कि फिजी में हिंदी की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भारत की ओर से एक भाषा प्रयोगशाला भेंट की जाएगी जिसके माध्यम से लोगों को सुगमता से हिंदी सीखने में मदद मिलेगी।अब तक दुनिया के ११ अलग-अलग देशों में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया जा चुका है। फिजी के साथ ही न्यूजीलैंड, सिंगापुर, मॉरीशस समेत कई देशों में हिंदी भाषा का बहुत ज्यादा इस्तेमाल होता है।
स्रोत - अंतरजाल

विनम्र निवेदन

ज्ञानोदय प्रभा का यह अंक ऑनलाइन प्रकाशित किया जा रहा है | हमारा प्रयास यही रहता है कि पत्रिका त्रुटि रहित हो इसके बाद भी यदि कोई भूल रह जाती है तो संपादक मंडल इसके लिए क्षमा प्रार्थी है |

ज्ञानेन पुंसां सकलार्थ सिद्धि :

संपादक – मंडल

मुख्य संरक्षक – प्राचार्य, ज्ञानोदय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुरई

मुख्य संपादक – डॉ. कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव

सह संपादक - आयुषी समैया

सहयोग - हिंदी विभाग

तकनीकी सहायता – श्री विशाल कटारे एवं तकनीकी विभाग

www.facebook.com/gyanodayakhurai

gyanodayaprincipal@gmail.com

www.gyanodayakhurai.org

youtube.com/UC_7RhrC1nipjZTanSKoEVEA

gyanodayakhurai/9826829441

gyanodayacampuscare.in

Gyanodaya khurai

9826829441, 07581-292149,292154

ज्ञानोदय सर्व मंगल विद्या मन्दिर, खुरई